International Journal in Management and Social Science
Volume 12 Issue 08, August 2024 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 8.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक मूल्य तथा वर्तमान माध्यमिक शिक्षा पाठयक्रम में मूल्यों के समावेश का विश्लेषणात्मक अध्ययन

नेहा,
शोधार्थी, कॉलेज ऑफ ऐजूकेशन, आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय मेरठ (उ.प्र.)

डा० संजीव कुमार
आचार्य, कॉलेज ऑफ ऐजूकेशन, आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय मेरठ (उ.प्र.)

अमूर्त

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के पश्चात समूची शिक्षा प्रणाली में भाती ाान परंपरा के अनुप्रयोग पर जोर दिया जाने लगा है। वर्तमान समय में भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में माध्यमिक शिक्षा के नवीन पुनरीक्षित पाठयक्रम पर जोर दिया जा रहा है। संप्रत्यय यह है कि शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में मूल्यों के विकास का जो उद्देश्य लक्षित था उसे हम कैसे प्राप्त कर सकें? इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर जानने के प्रयास में शोधार्थी द्वारा अपने शोध कार्य से प्राप्त कुछ निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है। ये निष्कर्ष शोधार्थी के शोध कार्य की अवधि में प्राप्त किये गये। पं श्रीराम शर्मा आचार्य भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों को पुनः जीवित करने वाले महान व्यक्तित्व हैं जिन्होंने शंतिकुंज के माध्यम से समचे भारत में ही नहीं अपितु विश्व में भारतीय संस्कृति एवं धार्मिक मूल्यों को पुनः स्थापित किया। क्योंकि भारतीय नागरिकों के निर्माण में माध्यमिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है अतः शोधार्थी ने अपने शोध कार्य में शिक्षा के माध्यमिक स्तर पर अनुप्रयोगित पाठयक्रम में समावेशित मूल्यों का अध्ययन प. श्रीराम शर्मा आचार्य के मूल्यों के आलोक में किया। परिणामतः शोधार्थी ने पाया कि वर्तमान में अनुप्रयोगित माध्यमिक शिक्षा के पाठयक्रम में समावेशित मानव मूल्य, पं. श्रीराम शर्मा द्वारा प्रतिपादित मूल्यों के समान ही हैं परन्तु उन्हें विद्यार्थियों द्वारा आत्मसात करने व अनुपालन करने हेतु उपयुक्त शिक्षण–अधिगम मूल्यांकन व्यवस्था एवं निर्देशन व मार्गदर्शन कार्यक्रमों का अभाव है। शिक्षार्थियों में मूल्यों के विकास हेतु उनके दैनिक क्रियाकलापों की देखभाल एवं उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

मुख्य शब्दः मूल्य शिक्षा, नई शिक्षा नीति 2020, माध्यमिक शिक्षा पाठयक्रम, ।

1. प्रस्तावनाः बदलते वैश्विक परिवेश में चहुँमुखी विकास करना प्रत्येक राष्ट्र का ध्येय है। चहुँमुखी विकास की इस दौड़ मे भारत भी अग्रणी बना हुआ है। विकास के इस युग में शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पाठयक्रम में तकनीकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी का समावेश करना अनिवार्य हो गया। फलतः शिक्षार्थी अपनी शिक्षा एवं अधिगम के नवीन आयामों को सूचना प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी के माध्यम से प्राप्त करने लगे। फलस्वरूप शिक्षक व शिक्षार्थी, विद्यालय वातावरण एवं शिक्षार्थी के मध्य सम्बन्धों में दूरियाँ बढ़ने लगी हैं। शिक्षा का जो वास्तविक लक्ष्य था– शिक्षार्थी का चारित्रिक विकास करना एवं उसको आत्मनिर्भर बनाना, उससे दूर हो गया है। वर्तमान शिक्षा शिक्षार्थी को आत्म–निर्भर न बनाकर उसे नौकरी के पीछे भागने वाला दास बना रही है एवं उसका चारित्रिक विकास मूल्यों तथा संस्कारिक शिक्षा के अभाव में शून्य प्रायः हो गया है। फलतः शिक्षित जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ने के बावजूद भी देश में भ्रष्टाचार, अपराध, हिंसा, नारी के प्रति हीन दृष्टिकोण, देश के प्रति प्रेम एवं समर्पण भाव में कमी का ग्राफ भी उसी तेजी से बढ़ा है। यदि ध्यान दिया जाये तो इन सभी के पीछे वर्तमान शिक्षा के पाठयक्रम में समावेशित मूल्यों की कमी अथवा मूल्यों को आत्मसात करने की विफलता दृष्टिगोचर होती है। ”भारत में आज के परिदृश्य में हमारे मूल्यों को नई पीढ़ी के नए फैशन द्वारा त्याग दिया गया है। ऐसी स्थिति में किसी के लिए यी बहुत आवश्यक है कि वह हमारे बुनियादी सिद्धान्तों को अपनाये ताकि हम एक उज्जवल जीवन जी सकें, इस प्रकार मूल्य शिक्षा इस आवश्यकता बहुत सरलता से पूरा करती है”–कुमार विज्ञानंद सिंह (2021)। ”मूल्य वास्तव में मानव अस्तित्व एवं व्यक्तित्व के

मूल आधार होते हैं। मूल्य मानव जीवन की वह आधारशिला है जिसके द्वारा समाज में उसका अस्तित्व होता है"– राणा वंदना (2021)। मूल्यों की महत्वता को ध्याान में रखते हुए एन.सी.ई.आर.टी. ने माध्यमिक शिक्षा के पाठयक्रम में मूल्यों को समावेशित किया। प्रत्येक विषय के मूल्यों को उल्लिखित किया गया। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा कुल 83 मूल्यों को अधिसूचित किया गया। शोधार्थी ने मूल्यों की महत्वता को ध्यान में रखते हुए "पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य की मूल्यपरक् शैक्षिक विचारधारा की प्रासांगिकता का नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन" शीर्षक के अन्तर्गत शोध कार्य किया। इस शोध के माध्यम से प. श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक मूल्यों की उपादेयता को जानने का प्रयास किया।

2. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) – ने विद्यालय के समस्त संसाधनों को बालक के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ व्यक्तित्व निर्माण, मूल्य शिक्षा, आध्यात्मिक विकास पर अत्यधिक बल दिया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 पर एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा जारी हस्त पुस्तिका के अध्याय तीन के अनुच्छदे 3.8 में शान्ति के लिए शिक्षा की बात प्रमुखता से कही गयी है। एन0सी0एफ0 2005 शान्ति शिक्षा को विशेष महत्त्व देता है, इसके द्वारा सिफारिश की गयी हे कि शान्ति को राष्ट्र निर्माण की पूर्व शर्त और सामाजिक संस्कार के रूप में समग्र मलूय संरचना के तौर पर स्वीकार किया जाय, जिसकी आज अत्यधिक प्रासंगिकता है। एक लोकतांत्रिक और न्यायपूर्ण संस्कृति में बच्चों के समाजीकरण के लिए मूल्य शिक्षा की सम्भावनाओं को विभिन्न गतिविधियों के द्वारा हर स्तर पर हर विषय में विवेकपूर्ण चयन के जरिये साकार किया जा सकता है। तिवारी राम बल्लभ (2006), ने शोधकार्य ''आचार्य शंकर द्वारा वर्णित साधन चतुष्टय और पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा वर्णित जीवन संस्कार पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन'' में निष्कर्ष पाया कि साधन चतुष्ट्य के व्यावहारिक स्वरूप को अपनाकर बालकों में स्वाध्याय, स्वानुशासन और तद्नुभूति की भावना का विकास किया जाना चाहिए। सिंह शैल कुमारी(2009), ने ''आचार्य श्रीराम शर्मा के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों का वैज्ञानिक अध्ययन'' में निष्कर्ष निकाला कि पं0 श्रीराम आचार्य ने अपने दार्शनिक विचारों में मूल्य शिक्षा पर बल दिया, बालकों में मानवीय मूल्यों का विकास कर उनमें उदात्त चरित्र का निर्माण सम्भव है। नम्रता बिहारिया (2012) द्वारा शोध कार्य "पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन का मूल्य–उन्मुखीकरण पर प्रभावः एक अध्ययन" में पाया कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के शिक्षा दर्शन का विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, आर्थिक मूल्यों, ज्ञान मूल्यों, आनंद मूल्यों व शक्ति मूल्यों पर विशेष सकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा लोकतांत्रिक मूल्यों, सौंदर्य ललित कला मूल्यों, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों व स्वास्थ्य मूल्यों पर सामान्य प्रभाव पड़ता है। बिष्ट मंजू (2017) ने शोध पत्र के द्वारा मूल्यों की उपादेयता सिद्ध की। मूल्यों को शिक्षा में समाहित करके ही हमारी नयी पीढ़ी के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक बोध राष्ट्रीयता सामाजिकता व नैतिकता की भावना लोकोपयोगी दृष्टि, जीवनोपयोगी दिशा और चिन्तन की क्षमता विकसित हो सकती है। हमारे देश के उच्च आदर्शों के अनुरूप हमारी शिक्षा के पीछे जो वास्तविक सिद्धान्त हैं जो सभ्यता व संस्कृति है, उसकी पूर्णता के लिये नये पाठ्यक्रमों का विकास करने पाठ्यपुस्तकों को नवीन राष्ट्रीय सन्दर्यों के साथ अपने परिवेश से जोड़ने, उन्हें समीचीन समाजोपयोगी और राष्ट्रीय पाठयचर्या के अनुरूप बनाने की बात आज के समय की माँग है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी भरतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करते हुए विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति, धार्मिक एवं राष्ट्रीय मूल्य के आत्मसातीकरण के द्वारा उनके चारित्रिक विकास एवं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की संकल्पना पर जोर दिया गया है। चाम्याल देवेन्द्र सिंह (2021) ने अपने शोध में निष्कर्ष दिया कि वर्तमान शिक्षा पद्धति और मूल्यों में कोई समन्वय नहीं है। भाषण, नोट्स तथा बने बनाये उत्तरों को दोहराने का कौशल ही शिक्षार्थी की परीक्षा की मापदण्ड है। ये गिरते हुए मूल्य हमारी शिक्षा के लिए एक चुनौती हैं। शिक्षा में सुधार के द्वारा ही इन्हें सुधारा जा सकता हैं। देश की इस भयंकर और चिन्तनीय स्थिति ने देश के शिक्षकों, शिक्षा विशेषज्ञों, शिक्षा आयोजकों और शिक्षा के कर्णधारों का ध्यान मानव मूल्यों की शिक्षा की आवश्यकता की ओर आकर्षित किया है। अब वे यह समझने लगे हैं कि शिक्षा में मूल्यों की स्थापना किये बिना पतन की ओर जाते समाज और राष्ट्र को रोका नहीं जा सकता। देश की सुरक्षा, शान्ति विकास और खुशहाली के लिए यही एक मात्र विकल्प है।

3. शोध के उद्देश्यः शोध कार्य के निर्धारित उद्देश्यों की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र में केवल निम्नलिखित दो उद्देश्यों को ही आधार बनाया गया है–

(1) पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, अनुशासन, शिक्षण विधि, विद्यालय, गुरु–शिष्य परम्परा सम्बन्धी विचारों का अध्ययन करना।

(2) नई शिक्षा नीति 2020 में शैक्षिक मूल्यों की प्रधानता एवं उनके महत्व के प्रावधानों का अध्ययन करना।

4. शोध विधिः प्रस्तुत शोध हेतु दार्शनिक एवं विश्लेषात्मक शोध विधियों का प्रयोग संयुक्त रूप से शोधार्थी द्वारा किया गया।

5. वर्तमान माध्यमिक शिक्षा परठयक्रम में समावेशित मूल्यों का पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक मूल्यों के सापेक्ष विश्लेषणः

वर्तमान माध्यमिक शिक्षा पाठयक्रम में मूल्यः भारत की वर्तमान माध्यमिक शिक्षा में विभिन्न विषयों के समावेश के साथ–साथ पाठय–सहगामी क्रियाओं के रूप में शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा, प्रोजेक्ट कार्य आदि को महत्व दिया गया है जिनका उद्देश्य शिक्षार्थी में समूह भावना के साथ–साथ चारित्रिक विकास एवं सांस्कृतिक विकास करना है। वर्तमान माध्यमिक शिक्षा में यदि मूल्यों के समावेश का विश्लेषण किया जाये तो उसमें छात्रों के विकास हेतु स्वास्थ्य मूल्य, राष्ट्र प्रेम मूल्य, आर्थिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, समाजिक सदभाव मूल्य, एकता मूल्य, व सृजनात्मक मूल्य पर अधिक ध्यान दिया गया है जबकि परमावश्यक नैतिक मूल्य, सदाचार मूल्य, धार्मिक मूल्य व सांस्कृतिक मूल्यों पर विशेष ध्यान देने का अभाव है। इससे अलग अधुनिक शिक्षा प्रणाली में जिस प्रकार से शिक्षण पद्धतियों का अनुसरण किया जा रहा है वह शिक्षार्थी द्वारा पाठयसहगामी क्रियाओं का सही प्रकार से अवलोकन एवं मूल्यांकन नहीं कर पाती हैं फलतः माध्यमिक शिक्षा का पाठयक्रम शिक्षार्थियों में वांछित मूल्यों के प्रतिष्ठापन एवं विकास में सफल नहीं हो पा रहा है। साथ ही विभिन्न विषयों के पाठयक्रम के जो मूल्य एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्धारित किये गये हैं वे विषयगत हैं जोकि अनुप्रयोगात्मक रूप से समाज एवं संस्कृति से परे हैं।

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा पाठयक्रम सम्बन्धी मूल्य विचारधाराः ‘‘पाठ्यक्रम निर्धारणकर्ताओं–प्रशिक्षण का सूत्र संचालन करने वालों का कर्तव्य है कि वे बालकों की शिक्षा व्यवस्था बनाते समय यह ध्यान रखें कि सामान्य ज्ञान का समावेश तो करें पर उस प्रक्रिया को उतने भर तक सीमित न रहने दें। विषय कुछ भी क्यों न पढ़ायें जायें, उनमें दुष्प्रवृत्तियों के मायाजाल एवं दुष्परिणाम और सत्परिणाम का विश्वास दिला सकने वाले तथ्यों का भी समावेश करें। जीवनचर्या किस आधार पर सही और सफल हो सकती है इसका क्रमिक ज्ञान प्रारम्भिक कक्षा से लेकर स्नातकोत्तर अवधि तक अनवरत् रूप से जारी रहना चाहिए। मानव जीवन अनेकानेक समस्याओं, अवरोधों एवं संकटों से घिरा हुआ है, उससे निपटना या तालमेल बिठाना हर जीवन्त व्यक्ति को आना चाहिए अन्यथा वह छोटे–छोटे प्रतिकूल प्रसंगों पर बुरी तरह उद्विग्न और दूसरों से विपन्न होता रहेंगे।’’

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार– सुसंस्कारिता संवर्द्धन के लिए अलग से प्रयास किया जाय। स्कूलों का वातावरण और अनुशासन ऐसा हो जिस साँचे में ढलकर शिक्षार्थी नीतिवान और पराक्रमी बनकर निकले। छात्रों के व्यक्तित्त्व को परिष्कृत करने की विधि–व्यवस्था भी हमारे पाठ्यक्रम का अविच्छिन्न अगं होनी चाहिए। ‘‘पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों में ऐसे विषय हों, जो भावी जीवन की समस्याओं का स्वरूप और समाधान समझने में काम आएं। उनका व्यवहार में उपयोग हो सके।’’ इसके लिए वर्तमान और उससे भी अधिक भविष्य सम्बन्धी परिस्थितियों का ज्ञान कराया जाना चाहिए। इतिहास को छोटी–छोटी कहानियों के रूप में संक्षेप में ही पढ़ाया जा सकता है। राजनीतिज्ञों को संसार भर के संविधान और वहाँ की समस्याओं को जानना चाहिए। विशेषज्ञ बनने वालों के लिए पृथक से एकेडेमियाँ हों, किन्तु सामान्य स्तर के छात्रों को जिन विषयों से कभी काम नहीं पड़ने वाला है, उनका बोझ उन पर लादने से क्या लाभ? इससे तो कहीं अच्छा यह है कि उन्हें शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक विषयों की ऐसी जानकारी दी जाए, जिसके आधार पर

उन्हें भावी जीवन के समाधान में कुछ सहायता मिल सके। वह अपने कर्तव्यों और अधिकारों की परिधि से भली प्रकार अवगत होकर सुयोग्य नागरिक बन सकें।

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों को भी मूल्यपरक् शिक्षा के लिए महत्पूर्ण आधार माना है। उनके अनुसार– ''पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों में ऐसे विषय हों, जो भावी जीवन की समस्याओं का स्वरूप और समाधान समझने में काम आएं। उनका व्यवहार में उपयोग हो सके।''

निष्कर्ष:

उपरोक्त विवेचन एवं विश्लेषण के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वर्तमान माध्यमिक शिक्षा के पाठयक्रम में वैश्विक विकास के परिदृश्य में वे सभी मूल्य तो सन्निहित हैं जो शिक्षार्थी वैश्विक स्तर पर मात्र आर्थिक रूप से सशक्त बनाते हैं लेकिन उनमें सांस्कृतिक, चारित्रिक, सामाजिक मूल्यों को गौण कर देते हैं। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने नैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, चारित्रिक एवं राष्ट्र प्रेम मूल्यों को शिक्षा के मूल आधार के रूप में समावेशित किये जाने पर जोर दिया है। राष्ट्र को सर्वोपरि मानते हुए पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने भी भारतीय ज्ञान परंपरा को संस्कृति एव चरित्र के संरक्षण का सशक्त माध्यम माना और उसके द्वारा ही बालक में मूल्यों का विकास किये जाने पर बल दिया। नारी के प्रति सकारात्मक सम्मानीय दृष्टिकोण, समाज के प्रति आस्था, चरित्र निर्माण, आर्थिक ईमानदारी एवं कार्य के प्रति उत्तरदायित्व एवं जवाबदेही जैसे मूल्यों का निमार्ण केवल शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है जोकि नई शिक्षा नीति 2020 के आधार स्तम्भ के रूप में माने गये हैं।

बदलते वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा को ही मूल्यों के आत्मातीकरण का माध्यम स्वीकार किया जा रहा है। समाज में व्याप्त बुराईयों को जड़ से समाप्त करने का समाधान एक मात्र मूल्यों का आत्मसातीकरण एवं उनका अनप्रयोग है। मूल्यों को अर्जित करके तथा उनका अनुपालन करके विकास का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के क्रिया–कलापों को सकारात्मक तरीके से अभिव्यक्त करने में मूल्य सहायक होते हैं, जिससे छात्र स्वयं समस्याओं का अनुभव करके तनाव दूर करने, द्वन्दों एवं दुविधाओं को दूर करने सामाजिक परिस्थितियों में समायोजन करके तथा वर्तमान एवं भविष्य में आने वाली चुनौतियों का सामना करने हेतु सक्षम बन सकें। मूल्य विद्यार्थियों में संयम तथा नवऊर्जा का संचार करके श्रेष्ठता के साथ कार्य सम्पन्न करने की अभिक्षमता को बढ़ाने तथा असामयिक वातावरण में उचित निर्णय लेने हेतु योग्य बनाते हैं। मूल्य विद्यार्थियों को मनोगत्यात्मक रूप से स्वस्थ जीवन व्यतीत करने का अवसर भी प्रदान करते हैं। जिससे व्यक्ति को मानसिक, आर्थिक, धार्मिक एवं व्यवहारिक रूप से सफलता के अवसर प्राप्त हो सके।

सन्दर्भः

1. आचार्य श्रीराम शर्मा, शिक्षा एवं समाज निर्माण, अखण्ड ज्योति प्रकाशन मथुरा, वर्ष 43, अंक–2, पृ010।
2. आचार्य श्रीराम शर्मा, अध्यात्मपरक शिक्षा के मूलभूत आधार, अखण्ड ज्योति प्रकाशन, 1981, पृ0 75।
3. आचार्य श्रीराम शर्मा, शिक्षा और विद्या, अखण्ड ज्योति प्रकाशन, मथुरा, 1998, पृ0 18।
4. आचार्य श्रीराम शर्मा, इक्कीसवीं सदी–उज्ज्वल भविष्य, अखण्ड ज्योति प्रकाशन, मथुरा, पृ0 2.13
5. आचार्य श्रीराम शर्मा, वसुधैव कुटुम्बकम्, हमारी गतिविधियों का मूल प्रयोजन, अखण्ड ज्योति वर्ष 30, अंक 6, पृ0 62।
6. आचार्य श्रीराम शर्मा, नवयुग की आधारशिला देंगे क्रान्तिदर्शी ऋषि, अखण्ड ज्योति, वर्ष 3, अंक 1, पृ0 38
7. श्रीमाली मन्दाकिनी, प्रज्ञा पुरुष का समग्र दर्शन, अखण्ड ज्योति प्रकाशन, मथुरा, 1998, पृ0 40।
8. कुमार विज्ञानंद सिंह (2021). समसामयिक शिक्षा में मूल्य शिक्षा का महत्व. जर्नल ऑफ इमरजिंग टेक्नोलॉजिज एण्ड इन्नोवेटिव रिसर्च. वाल्यूम–8, अंक–2 ISSN:23495162. वर्ष 2021. Retrived from: https://www.jetir.org/papers/JETIR2102082.pdf
9. चाम्याल देवेन्द्र सिंह (2021), मानवीय मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्द्धन में शिक्षा की भूमिकाः एक अध्ययन. IJARIIE- Vol-7. Issue-2. ISSSN:23954396. 2021. पृ.808. Retrived from: https://ijariie.com/AdminUploadPdf/Role_of_Education_in_conversation_and_enchantment_of_Human_values___A_study_ijariie13948.pdf?srsltid=AfmBOooITkcRIoH0bAh5PCnTUbs_-kdX7BHvi_CbIduxnNL2wh7I9G-u
10. देव संस्कृति, इण्टरडिसीप्लीनरी इण्टरनेशनल जर्नल, वॉल्यूम–1, वर्ष 2012, आई.एस.एस.एन.: 25824589
11. राणा वन्दना (2021). वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसीप्लीनरी ऐजूकेशन एण्ड रिसर्च. वाल्यूम–6. अंक–3. ISSN:24554588 वर्ष 2021. पृ.–28. Retrived from: https://www.multieducationjournal.com/assets/archives/2021/vol6 issue3/6-4-18-452.pdf